● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. मुक्ति का प्रतिदान

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने लालच से दूरी बनाए रखने एवं किए गए उपकार के बदले प्रत्युपकार को रेखांकित किया है ।

विचार मंथन

।। कृतज्ञ बनो, कृतघ्न नहीं ।।

विचार मंथन की कृतियों करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

* विद्यार्थियों से कृतज्ञ और कृतघ्न शब्दों पर चर्चा करें । * उन्हें अपने अनुभव बताने के लिए कहें ।
* विद्यार्थियों से पूछें कि क्या उनपर किसी ने कोई उपकार किया है ? * यदि हाँ तो बदले में उन्होंने क्या किया ?
* कृतज्ञता एवं कृतघ्नता में से विद्यार्थी किसे अपनाना पसंद करेंगे बताने के लिए कहें । * इन बातों के क्या परिणाम हो सकते हैं, पूछें ।
* किन-किन के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए ? * उनकी सूची बनवाकर वर्गीकरण (घर के सदस्य, मित्र, प्राणी, पेड़ आदि) कराएँ ।

बहुत पहले की बात है । अचलपुर नामक एक गाँव था । वहाँ के लोग बड़े सीधे-सादे और ईमानदार थे । उन्हें किसी बात का लालच नहीं था । धन-दौलत, सोना -चाँदी, रुपये-पैसे का महत्त्व हर युग में ही रहा है । लोग इन्हें पाने और लूटने के लिए क्या-क्या अत्याचार नहीं करते ? उन्हीं दिनों दो व्यक्ति महात्मा ज्ञानी जी के पास सोने के सिक्कों से भरी एक थैली लेकर उपस्थित हुए । दोनों ही थैली से मुक्ति पाना चाहते थे ।

समस्या यह थी कि उन दोनों में से कोई भी उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं था । उन दोनों ने अपने दामादों को सिक्कों से भरी वह थैली दान-दहेज में देना चाहा तो उन्होंने भी यह कहकर लेने से साफ मनाही की कि दहेज लेना बिलकुल अनुचित है । उन्होंने कहा, ''यह एक सामाजिक अपराध है । दहेज लेना और देना, दोनों ही गैरजरूरी और अमान्य हैं । कन्या एक रत्न है । उसके साथ दहेज लेने वाला अक्षम्य और कठोर दंड का भागीदार होता है। इसके अतिरिक्त दान उसे लेना चाहिए जिसको उसकी जरूरत हो अतः हम यह धन नहीं ले सकते ।''

अब ज्ञानी जी के सामने भी यह विकट समस्या थी । उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर यही प्रश्न किया- ''यह चकाचौंध करने वाला धन किसको दिया जाए?''

एक ने कहा, ''यह संपत्ति इस देश के राजा को सौंप दी जाए क्योंकि वही इस देश और धरती का स्वामी

❑ विद्यार्थियों से कहानी का मौनवाचन कराएँ । विद्यार्थियों से इस कहानी को अभिनय के साथ उनके शब्दों में सुनाने के लिए कहें । 'मुक्ति' और 'प्रतिदान' शब्दों पर चर्चा करें । उनसे कहानी में आई प्रमुख घटनाओं पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।

जरा सोचो ..... लिखो

रुपये/सिक्के बोलने लगे तो .....

है। राजा के पास यह संपत्ति जाएगी तो वह अपने लिए थोड़े ही रख लेंगे। इस संपत्ति से समाज की भलाई का ही कोई काम करेंगे। यह संपत्ति राजा को देंगे तो वे हम पर खुश होकर हमारा सम्मान कर सकते हैं।''

इसपर एक आगंतुक किसान मित्र ने यह कहकर विरोध किया, ''सिक्कों से भरी वह थैली जिस खेत से मिली है, वह मेरा था किंतु उस खेत को वास्तव में मेरा यह मित्र जोतता-बोता था। मेरा यह कहना है कि यह संपत्ति भी उसी को मिले। इस संपत्ति का असली हकदार वही है।''

दूसरे ने विरोध प्रकट किया, ''अचानक मिली हुई यह दौलत मेरे खून और पसीने की कमाई नहीं है, यह मुफ्त की कमाई है। मुफ्त की कमाई फलदायी नहीं होती इसलिए मैं इसे स्वीकार करके ईश्वरीय न्याय और संपदा से विमुख नहीं होना चाहता।''

ज्ञानी जी उन दोनों मित्रों के उदात्त विचारों से गदगद हो उठे। अब उनकी प्रश्नवाची दृष्टि अपने दूसरे शिष्य की ओर उठी। उसका उत्तर था, '' नीति तो यह कहती है कि जब एक वस्तु लेने वाला कोई न हो तो वह वस्तु किसी को दान कर दी जाए। यदि यह दान मुझे ही दे दिया जाता तो ...'' आगे की बात उस शिष्य के गले में ही अटक गई, वह गड़बड़ा गया क्योंकि ज्ञानी जी उसको घूरने लगे थे।

अब तीसरे शिष्य की बारी थी। उसका कहना था, ''इस दौलत को फिर उसी जमीन में गाड़ दिया जाए।'' इस तरह कोई उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं हो रहा था। ज्ञानी जी निराश हो गए फिर उन्हें एक आशा की किरण दिखाई दी। उनकी आँखों में चमक आ गई। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में अपने सबसे छोटे शिष्य से पूछा, ''यदि तुम मेरी जगह होते तो कैसा न्याय करते?''

शिष्य का यह भोला-भाला उत्तर गुरु जी को पसंद आया, ''मेरी आत्मा कहती है कि धरती माँ ने यह दौलत किसी शुभ कार्य या लोकहित के लिए दी हैं। क्यों न इस विस्तृत भूखंड में ऐसा सदाबहार बाग लगाया जाए जिससे तमाम लोगों को फल, पंछियों को बसेरा और पथिकों को मुफ्त में छाया मिल सके।''

उसके विचार सुनकर सबकी बाँछें खिल गईं। अस्तु, गुरु जी ने वह सारे सिक्के उसे सौंपकर उत्तम फलों के बीज खरीदने के लिए राजधानी की यात्रा का आदेश दे दिया। शिष्य ने अपने गुरु के आदेश को शिरोधार्य करके अपनी यात्रा का श्रीगणेश किया।

वह लगातार चलता रहा। मन-ही-मन सुंदर बाग की कल्पना भी करता जा रहा था। कई दिनों की यात्रा करने के पश्चात जब वह होनहार शिष्य राजधानी के चौक-बाजार में सर्वोत्तम बीजों की तलाश में घूम रहा

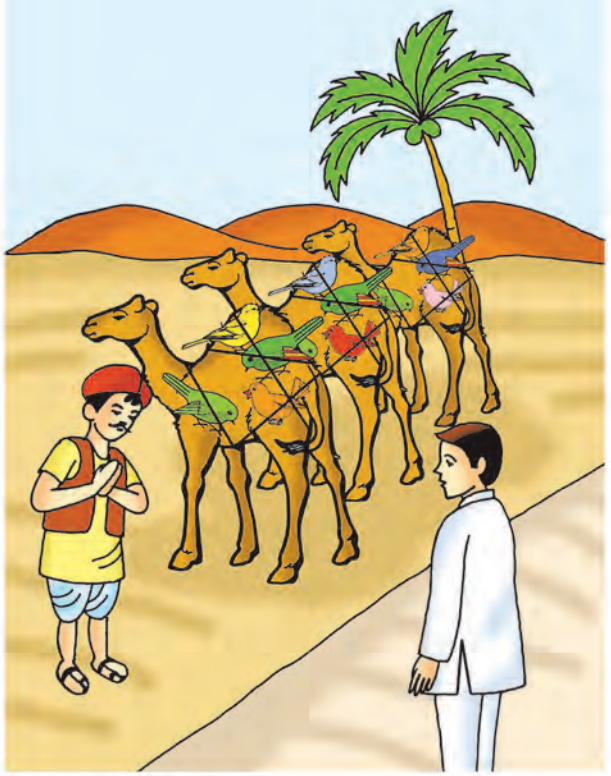

❑ विद्यार्थियों से कहानी में वर्णों को ढूँढ़कर श्यामपट पर लिखवाकर क्रम से बताने के लिए कहें। वर्ग के अनुसार वर्णमाला लिखवाएँ। विभिन्न प्रकार के दस वाक्य देकर उनके शब्दों का लिंग परिवर्तन करके वाक्य पुनः लिखने के लिए कहें।

मेरी कलम से

निम्न शब्दों को लेकर एक कविता लिखो :

झरना | स्नेह | फूल | आकाश

था तो गुजरते हुए ऊँटों के एक काफिले का शोर उसने अचानक सुना । उसने देखा ऊँट पर एक व्यक्ति सवार था । देखने में वह मुखिया लग रहा था । उसके पास पिंजड़े में बंद पक्षी थे । उनमें घोर करुण चीत्कार उन घायल और मौत से जूझते, दम तोड़ते हुए पक्षियों का था, जिन्हें उस कारवाँ का मुखिया ऊँटों की पीठ पर जालों में फँसाकर खान साहब के महल की तरफ लिए जा रहा था । मौत से डरे, मरे-मरे-से पक्षी, मुक्ति के लिए छटपटा रहे थे।

उस उदार हृदय युवक से वह करुण क्रंदन नहीं देखा गया तो उसने मुखिया से बात की । मुखिया को समझाया कि प्राणिमात्र पर दया करना सबसे बड़ा धर्म है । उसने कहा, ''इन निरीह पक्षियों को स्वतंत्र करके पुण्य की कमाई कर लें क्योंकि पुण्य ही सबसे बड़ा कर्म है ।'' उन निरीह पक्षियों को छोड़ देने का आग्रह सुनकर मुखिया हाथ जोड़कर बोला, ''खान साहब, इन चिड़ियों के बदले पाँच सौ नकद स्वर्ण मुद्राएँ देंगे । तुम्हारे पास क्या है जो मैं इन्हें छोड़ दूँ ?'' सभी प्राणियों का दर्द समझने वाले उस युवक ने सोने के सिक्कों से भरी हुई थैली का मुँह उस लालची मुखिया के आगे खोल दिया। उस सुनहली दौलत को देखकर मुखिया की आँखें फैल गईं । बात- बात में सारे पक्षी मुक्त कर दिए गए ।

अब वह शिष्य मन मारकर अपने गुरु के पास लौट रहा था । मुक्त हुए सभी पक्षी उसपर छाया करते और चहचहाते, गीत गाते-से चल रहे थे । फिर भी उस शिष्य के पैर यह सोचकर मानो जड़ होते जा रहे थे कि वह अपने गुरु को क्या उत्तर देगा ? क्या करने आया था और तैश में आकर क्या कर बैठा ? इसी सोच में वह अभागा मृत्यु की कामना करते-करते थककर सो गया।

नींद में स्वप्न, स्वप्न में पक्षियों की मुक्त चहचहाहट के बीच उन पक्षियों की रंग-बिरंगी रानी उसके सीने पर फुदक-फुदककर जगा रही थीं, ''उठो, भोले-भाले, होनहार, दयालु साथी ! अपने सभी दुख भूल जाओ । हम सभी आजाद पक्षियों ने मिलकर पहले ही तुम्हारे उस विशाल भूखंड में तरह-तरह के फलों के बीज बो दिए हैं । आँखें खोलो और वहाँ जाकर देखो ।''

अब वह युवक जागकर उन मैदानों की ओर सरपट दौड़ने लगा । उसके आगे-पीछे और ऊपर तक न केवल पक्षियों की चहचहाहट-ही-चहचहाहट थी बल्कि वहाँ जाकर उसने यह भी देखा कि दुनियाभर के तमाम पक्षी अपनी चोंचों और पंजों से धरती खोद रहे हैं, शिष्यों के साथ कुछ लोग बीज बो रहे हैं, पौधे लगा रहे हैं।

उसके गुरु और अन्य एकत्रजन मुक्ति के इस प्रतिदान का करिश्मा देखकर फूले ही नहीं समा रहे थे बल्कि वे भी बागवानी में बढ़-चढ़कर हाथ बँटा रहे थे।

❑ पाठ में आए शिष्य, रानी, भोला-भाला, ऊँट, मुखिया, बालक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर लिखवाएँ । रास्ते में चलते समय यदि किसी विद्यार्थी को कोई मूल्यवान वस्तु, दस्तावेज आदि मिल जाए तो वह क्या करेगा, बताने के लिए कहें।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसी सुनी हुई कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रतिदान = बदले में दिया गया दान
महात्मा = सज्जन, सत्पुरुष
चकाचौंध = चमक-दमक
क्रंदन = विलाप
अभागा = बदनसीब
करिश्मा = चमत्कार

मुहावरे

गदगद होना = अत्यधिक खुश होना
बाँछें खिलना = खूब प्रसन्न होना
श्रीगणेश करना = प्रारंभ करना
आँखें फैल जाना = चकित होना
फूला न समाना = बहुत खुश होना
तैश में आना = जोश/आवेश में आना
हाथ बँटाना = सहयोग करना

सुनो तो जरा

अपनी बोली भाषा का कोई त्योहार गीत सुनो, सुनाओ ।

वाचन जगत से

समाचार पत्र से न्याय संबंधी कोई घटना पढ़ो । उससे संबंधित रोचक तथ्य बताओ ।

बताओ तो सही

'बेटी बचाओ' अभियान पर सूचनानुसार सामग्री तैयार करो और सुनाओ :

- पोस्टर
- घोषवाक्य
- सुविचार
- विज्ञापन

खोजबीन

'मृदा परीक्षण' से संबंधित सरकारी योजनाएँ ढूँढ़कर ज्ञात करो और लिखो :

- मृदा के प्रकार
- प्रयोगशाला और विधि
- लाभान्वित व्यक्ति

www.soilhealth.dac.gov.in

अध्ययन कौशल

भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, उद्धरणों का संकलन करो और लेखन में प्रयोग करो ।

❊ **इस पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :**

(क) अक्षम्य और कठोर दंड
(ख) ईश्वरीय न्याय और संपदा
(ग) सुनहली दौलत
(घ) चौक-बाजार
(च) गुरु और अन्य एकत्रजन
(छ) सुंदर बाग

सदैव ध्यान में रखो

स्वतंत्रता प्रत्येक का अधिकार है ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । वाक्यों के वचन बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो :

१. मैं बुरी रीति को मिटाना चाहता हूँ ।
.....

२. खेत में सिंचाई के लिए नहर से पानी लेते हैं ।
.....

३. छतों पर रखी पानी की कटोरियाँ खाली थीं ।
.....

४. विद्यार्थी ने अतिथि को माला पहनाई ।
.....

५. चोर कीमती वस्तुएँ लेकर भाग गए ।
.....

६. कुटी में साधु ध्यान लगाकर बैठे हैं ।
.....

७. वन में मोर नाचता है ।
.....

८. हमने स्वतंत्रता दिवस पर नारे लगाए ।
.....

९. सभा में राजा सहयोगी से चर्चा कर रहे थे ।
.....

१०. गुणवान वधू की प्रशंसा होती है ।
.....